OM 14 FINAL-c_Page 1 and 2 02-10-2014 18:20 Page 10

उठो...सम्पूर्णता तुम्हारा आह्वान कर रही है..।

-ब्र.कु.सूर्य, माउण्ट आबू

योगी योग के आनंद में खो गया। अन्तर्ध्यान अवस्था में उसने एक दृश्य देखा। उसके सम्मुख एक तरफ फरिश्ता हाथ में माला लिए खड़ा है और अपनी मधुर मुस्कान से इशारा कर रहा है, आओ, मेरे समीप आओ..... यह माला तुम्हारे लिए ही है....।

मैं तुम्हारा ही स्वरूप हूँ, जल्दी आओ, मैं तुमसे मिलकर एक होना चाहता हूँ..... मैं ही तुम्हारी मंज़िल हूँ। बस कदम बढ़ाओ.... ओ योगी, रुके क्यों हो? क्या तुम्हें समय का इंतज़ार है? नहीं-नहीं, यह भूल न करना, ज्यों ही तुम मेरे पास आओगे, समय स्वत: ही समाप्ति की घंटी बजा देगा।

अचानक ही जब उसने दूसरी ओर देखा तो पाया कि एक देवता हाथ में ताज लिए उसकी ओर इशारा कर रहा है। आवाज आ रही थी, आओ तुम्हें यह ताज पहना दूँ। योगी पहचान न सका कि वह कौनसा देवता है।

देवता मुस्कुराया, उसके मुख से मानो फूल झरने लगे। वातावरण खिल उठा। उसने आकर्षक वाणी में कहा - ओ योगी, मैं तुम्हारा ही भविष्य स्वरूप हूँ, मैं तुम्हारा कब से इंतज़ार कर रहा हूँ, आओ.... इस ताज को स्वीकार करो। तुम्हें ये ताज पहनाकर, मैं तुममें समा जाना चाहता हूँ.....।

योगी के लिए नितांत मनमोहक दृश्य था यह। छवि देखते ही बनती थी। योगी इसे देखने में ही मग्न रहना चाहता था कि - अचानक उसका ध्यान भंग हुआ। चलो.... ऐसा सुन्दर समय फिर कभी नहीं आयेगा। चलो, वरण करो अपने अंतिम स्वरूप का। अब मुझे और इंतज़ार न कराओ - फरिश्ते की मधुरवाणी सुनाई दी।

योगी के कदम आगे बढ़े.... परन्तु चार कदम चलकर वह रुक गया। उसे लगा बहुत दूर है फरिश्ता....।

फरिश्ता हंसने लगा - क्यों योगी, यह क्या? मैंने सोचा अब तुम गति पकड़ोगे, यह क्या किया? कहा फरिश्ते ने।

योगी बोला- फरिश्ते, तुम मुझे अत्यंत प्रिय हो। मैं पल भर में तुम्हारे पास आ जाना चाहता हूँ, परन्तु, मैं विवश हूँ।

फरिश्ते ने मानो मजाक किया - विवश? योगियों के ये बोल? सर्वशक्तिवान् के बच्चे और ये बोल।

मुझे शर्मिंदा न करो। तुम तो बंधनमुक्त हो, परन्तु मेरे कई बंधन मुझे आगे नहीं बढ़ने देते। मैं आगे बढ़ता हूँ वे फिर मुझे पीछे खींच लेते हैं। मोह के बंधन बड़े कड़े हैं, मैंने जो कुछ भी आज तक संग्रह किया है, वो सब मेरे लिए बंधन बन गया है - बोलो मैं क्या करूं - योगी ने कारण बताया।

फरिश्ता बोला - योगी जन्म-जन्म तुम बंधनों में जकड़े रहे हो, अब तुम इन बंधनों को पल भर में क्यों नहीं तोड़ देते हो? तुम देख चुके कि इन बंधनों में दु:ख ही दु:ख है। तुम दु:ख को स्वीकार भी कर रहे हो, परन्तु बंधनों को तोड़ना भी नहीं चाहते। नहीं फरिश्ते, ऐसी बात नहीं है, मैं तो इन्हें तोड़ना चाहता हूँ परंतु इन्होंने मुझे मजबूती से पकड़ लिया है, मैं चाहते हुए भी छूट नहीं पाता हूँ - योगी ने छूटना चाहा।

फरिश्ता पुन: मुस्काया - मैं तुम्हारे अन्तर्मन के भावों को भी जानता हूँ। योगी, बंधनों ने तुमको नहीं पकड़ा है, तुमने उन्हें पकड़ा है। तुम चाहो तो छूट सकते हो। जल्दी करो। यदि मेरा वरण करना चाहते हो तो एक झटके-से बंधनों की रस्सियाँ तोड़ दो। परंतु कैसे तोड़ दूं? योगी ने पुन: प्रश्नवाचक आवाज में कहा, जबकि भगवान् स्वयं बोझ हरने आया है, तो तुम उसे देते क्यों नहीं? क्यों तुम, तेरे-मेरे के जाल बुनकर उसमें फंस गये हो? याद रखो, हे योगी, यदि तुमने ये जाल न तोड़ा तो समय जबरदस्ती तुमसे ये जाल तुड़वायेगा। और पता है, तब क्या होगा? तुम्हें असहनीय कष्ट होगा और तब यह माला तुम्हारे गले की नहीं किसी और के गले की शोभा बनेगी, इसलिए मानो मेरा कहना अन्यथा तुम बहुत पछताओगे। समय ललकार रहा है, तोड़ो बंधन एक संकल्प से आओ, मैं तुम्हारा स्वागत करने को उत्सुक हूँ। फरिश्ते ने पुन: दोहराया।

योगी कुछ क्षणों के लिए मग्न हो जाता है, ठीक कहता है फरिश्ता। बंधन है तो कुछ भी नहीं। यों ही मन के बंधन बांध लिये हैं। मैं इन्हें साहस से तोड़ दूंगा।

योगी फिर आगे बढ़ता है। चार कदम चलकर फिर रुक जाता है। क्यों रुक गये योगी? फरिश्ते ने संकेत किया। मैं पुन: मजबूर हो गया। बंधन तोड़े तो अहम् ने प्रवेश कर लिया, अलबेलापन, ईर्ष्या व सूक्ष्म कामनाओं ने मुझे चारों ओर से घेर लिया। मेरे कदम रुक गये - योगी ने उत्तर दिया। फरिश्ता बोला, वाह योगी, बड़े-बड़े शत्रुओं को जीत लिया, छोटों से घबराते हो। योगी ने स्वीकार किया, हाँ है तो छोटे ही, परन्तु इतने सूक्ष्म कि पता भी नहीं चल पाता, कब ये आक्रमण करते हैं। अचानक के वार को मैं झेल नहीं पाता। फरिश्ते ने समझाया - योगी, नम्रता का कवच सदा के लिए धारण कर लो, ज़िम्मेदारी की स्मृति का टोप पहन लो, फिर चाहे कभी भी आक्रमण हो, विजय तुम्हारी ही होगी। मनन के द्वारा अपने मन में शुभ-भावनाओं का बल भरो और आगे बढ़ो, अब समय न गंवाओ, तुम आगे बढ़ो, शत्रु स्वयं ही पीछे हट जायेंगे।

मैं सम्पूर्ण पुरुषार्थ करता हूँ। योगी पुन: आगे बढ़ता है परन्तु दो कदम चलकर फिर रुक जाता है। फिर वही रुकने की आदत - फरिश्ते ने टोका। योगी बोला - योग में एकाग्रता नहीं होती। इसलिए कदम रुक रहे हैं।

एकाग्रता - वाह, जबकि एक ही तुम्हारा है तो मन कहां भागता है, सब द्वार बंद कर लो। जरूर कुछ इच्छाएं हैं। इच्छाओं के द्वार से मन बाहर आकर्षित हो रहा है। एक बाप से ही सब-कुछ लेना है, वही मेरा संसार है - यह दृढ़ता धारण करके आगे बढ़ो। ओ योगी, अब रुको नहीं। तुम रुकते हो तो समय रुकता है। तुम रुकते हो तो अनेक आत्माएं रुकती हैं, ज़रा देखो तुम्हारे पीछे कितना बड़ा झुण्ड है! तुम विश्व के आधार हो, रुको नहीं, चलते रहो, रुकना मृत्यु है, चलना ही जीवन है, बढ़ते रहो, हिम्मत न हारो, विजय तुम्हारी ही है, साहस से कदम बढ़ाओ, मेरे पास आकर ही तुम बाप को प्रत्यक्ष कर सकोगे - फरिश्ते ने साहस दिलाया।

इस प्रकार योगी में उमंग, उत्साह आया, उसके मन का बोझ हट गया और उसने तीव्र गति से आगे बढ़ना आरंभ किया।

फरिश्ता बोला - शाबाश, परंतु तुम्हारे विचार अभी भी हद के हैं, महान् व सूक्ष्म नहीं हुए, तुम्हारे बोल अभी भी स्थूल हैं, इन्हें रॉयल व स्वमान युक्त करो, अन्यथा यह माला तुम्हारे गले में पड़ते ही मुरझा जायेगी। इसलिए सूक्ष्म होकर ही मेरा वरण करो। ऐसा कहकर फरिश्ता लोप हो गया। तब योगी का ध्यान देवता की ओर गया जो उत्सुकता से उसकी राह देख रहा था।

वह बोला - मुझे न भूलो योगी, लो ये ताज पहनो। आओ, मेरी ओर भी आओ, देखो, विश्व का राज्य-भाग्य तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। यह भाग्य केवल एक बार ही प्राप्त होता है। शिवबाबा ने मुझे, तुम्हें ये ताज पहनाने के लिए भेजा है। आओ.... बड़ा आकर्षण था इधर, योगी तीव्रता से उसकी ओर बढ़ा, परन्तु उसे लगा कि मैं साधारण मनुष्य, कैसे जाऊँ देवता के पास। देवता बोला - क्यों, मंज़िल दूर क्यों दिखाई देने लगी, मैं तो तुम्हारे बिल्कुल ही समीप हूँ। आओ....

हे देव, मेरे ये पुराने संस्कार, मुझे तुम दिव्य शरीरधारी के पास आने में हिचकिचाहट पैदा करते हैं। मुझे अभी तक आवेश भी आता है, मेरी दृष्टि वृत्ति शभी मुझे धोखा देती है। मैं क्या करूं? योगी ने-- शेष पेज 7 पर...

मलेशिया। '7 बिलियन एक्टस ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शशि,माउण्ट आबू ,ब्र.कु मीरा तथा अन्य भाई बहनें।

केशोद-गुज.। '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डॉ. प्रो. भूपेन्द्र जोषी। साथ हैं प्रो. गजेरा साहब, हरदेव सिंह रायजादा,चीफ,गुजरात न्यूज़ चैनल, ब्र.कु. रामप्रकाश,न्यू यॉर्क तथा ब्र.कु. रूपा।

कोटा। कोटा ओपेन यूनिवर्सिटी में वृक्षारोपण करते हुए डॉ. विनय पाठक,वाइस चांसलर,कोटा ओपेन यूनिवर्सिटी, ब्र.कु. मृत्युंजय,वाइय चेयरपर्सन,एज्युकेशन विंग, ब्रह्माकुमारीज़ ।

सीपत। विश्वकर्मा जयंती पर्व पर अपोलो हॉस्पिटल में देवियों की चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में अपोलो हॉस्पिटल के सी.ई.ओ. डॉ. ए.के. अग्रवाल, ब्र.कु. राजकुमारी तथा अन्य।

आंवला-बरेली। इफको कंपनी के जी.एम. ए.के महेश्वरी को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रजनी।

वाँदा-उ.प्र.। जिला करारगार अधीक्षक सन्तोष कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.गीता। साथ हैं ब्र.कु. शालिनी तथा अन्य।